ताज महल

साहिर लुधियान्वी

ताज तेरे लिये एक मज़हर–उलफ़त ही सही
तुम को इस वादी–ए–रंगीन से अक़ीदत ही सही

मेरे महबूब कहीं और मिला कर मुझ से

बज़्म–ए–शाही में ग़रीबों का गुज़र क्या मानी
सबत जिस राह पे हों सतावत–ए–शाही के निशान
उस पे उलफ़त भरी रूहों का सफ़र क्या मानी
मेरी महबूब पास–ए–परदा–ताशीर–ए–वफ़ा
तूने सतावत के निशानों को तो देखा होता
मुर्दा शाहों के मक़ाबिर से बहलने वाली
अपने तारीक मकानों को तो देखा होता

अनगिनत लोगों ने दुनिया में मुहोब्बत की है
कौन कहता है कि सादिक़ न थे जज़बे उन के
लेकिन उन के लिये ताशीर का सामान नहीं
क्योंकि वे लोग भी अपने ही तरह मुफ़लिस थे

ये इमारत–ए–मुक़ाबिर ये फ़ासिले ये हिसार
मुतल–कुलहुकुम शहनशाहों की अज़मत के सुतून
दामन–ए–दहर पे उस रंग की कलाकारी है
जिस में शामिल है तेरे और मेरे अजदाद का खून

मेरे महबूब उन्हें भी तो मुहोब्बत होगी
जिनकी सनाई ने बख़्शी है इसे शक्ल–ए–जमील
उन के प्यारों के मक़ाबिल रहे बेनाम–ओ–नमूद
आज तक उन पे जलाई न किसी ने क़न्दील
ये चमनज़ार ये जमना का किनारा ये महल
ये मुनक्कश दर–ओ–दीवार ये महराब ये ताक़
इक शहनशाह ने दौलत का सहारा ले कर
हम ग़रीबों की मुहब्बत का उड़ाया है मज़ाक
मेरे महबूब कहीं और मिला कर मुझसे